भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल

भूगोल में तीसरा महत्वपूर्ण द्वैतवाद विषयवस्तु से सम्बन्धित है। यह द्वैतवाद भूगोल को दो विषय वस्तु में विभाजित करता है । ये है – भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल। इस द्वैतवाद की शुरूआत भी जर्मनी में हुई। जर्मनी के प्रारम्भिक भूगोलवेताओं मे हम्बोल्ट, रिटर, रिचथोफेन, हेटनर, अल्बर्ट पेंक और बाल्थर पेंक जैसे विद्धानो ने भौतिक भूगोल को भूगोल के विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया। हम्बोल्ट ने भूगोल को छः आधारभूत सिद्धांत विषयवस्तु से सम्बन्धित बताया । उन्होने स्पष्ट लिखा है कि " भौतिक भूगोल ही सामान्य भूगोल है " रिटर ने अर्डकुण्डे के अन्तर्गत "मनुष्य को एक भौतिक कारक' बताया है। अत मनुष्य को पृथ्वी के अन्य जैविक समुदायों के ही समान माना गया है। रिटर के अनुसार मनुष्य को मेधावी चरित्र के आधार पर विशिष्ट पहचान नहीं है। यह कार्य रेटजल महोदय ने भी किया जब उन्होने मानव भूगोल विकसित किया ।

जर्मन भूगोलवेताओं द्वारा विकसित भौतिक भूगोल का समर्थन अनेक अमेरिकी एवं ब्रिटिश भूगोलवेताओ ने भी किया है। अमेरिकी भूगोल के प्रारम्भिक दिनो मे भौतिक भूगोल की मान्यता थी । अमेरिका में भूगोल के अध्ययन की शुरूआत का श्रेय गुयोट को जाता है । ये अमेरिका में भूगोल के प्रथम प्रोफेसर थे । ये स्थलाकृति वैज्ञानिक थे । इन्होने समुद्र की तली का अन्वेषण किया है । इनका अध्ययन समुद्र की तली पर ही आधारित है । गुयोट के अलावे सेलिसबरी एवं डब्ल्यु एम० डेविस जैसे विद्वानों ने भी भौतिक भूगोल स्थापित किया । डेविस की प्रसिद्ध पुस्तक "एसेज इन ज्योग्राफी" में मूलतः स्थलकृतिक अध्ययन है ।

ब्रिटिश भूगोलवेताओं में हर्बर्टसन तथा मार्गन भौतिक भूगोल के प्रबल समर्थकों में से थे । हर्बटसन ने ही भौतिक भूगोल को चार प्रमुख वर्गो मे बाँटा है । (1) स्थलाकृतिक विज्ञान (2) जलवायु विज्ञान (3) समुद्र विज्ञान (4) वनस्पति विज्ञान ।

हम्बोल्ट तथा रिटर की मृत्यु के बाद जर्मन भूगोल के क्षितिज पर रेटजल का उदय हुआ । रेटजल प्रकृतिवादी थे लेकिन उनके चिन्तन पर न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण सिद्धांत, डार्विन के विकासवादी सिद्धांत और स्पेन्सर के सामाजिक–डार्विनवाद का प्रभाव था । उन्होने अनुभव किया कि प्रकृति की एक विशिष्ट पहचान है 'सास्वत विकास' । यही विकास मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करता है । और मनुष्य मात्र भौतिक कारक न होकर स्वयं निर्णय लेनेवाला एक विवेकशील प्राणि है । अतः मनुष्य और उनके कार्य उनके अधिवास और वातावरण से उनके अन्तरासंबंध का स्वतंत्र अध्ययन आवश्यक है और इसी संदर्भ में उन्होंने मानव भूगोल को स्थापित किया।

Scanned with CamScanner

इसलिए उन्हे मानव भूगोल का पिता कहा जाता है । रेटजल के इसी कार्य के साथ भूगोल में दूसरा द्वैतवाद प्रारम्भ हो गया । रेटजल के समर्थको ने इस बात पर जोर दिया कि भूगोल में प्रकृति का अध्ययन मानव के संदर्भ में हो । अर्थात मानव–वातावरण अंतराकर्षण के परिपेक्ष में ही प्रकृति का अध्ययन को जबकि भौतिक भूगोलवेत्ताओ ने इसका विरोध किया । उनके अनुसार मनुष्य अधिक से अधिक एक प्राकृतिक कारक है इसलिए वह भूगोल के अंतर्गत एक स्वतंत्र विषयवस्तु नहीं हो सकता ।

लेकिन रेटजल के कार्यो में तर्क था इसलिए मानव भूगोल का तेजी से विकास हुआ । जर्मनी की तुलना में फ्रांसीसी, ब्रिटिश और अमेरिकी भूगोलनेताओं ने मानव भूगोल को तेजी से मान्यता दी । फ्रांस में तो भूगोल का उदय मानव भूगोल के रूप में हुआ । फ्रांसीसी भूगोलनेताओं ने जिस सम्भववादी संकल्पना को विकसित किया था वह मूलतः मानव भूगोल के ही अन्तर्गत है । फ्रांसीसी भूगोलनेतओं से ब्लाश, बुन्स और डिमांजिया ने मानव भूगोल जैसी पुस्तके लिखी और भूगोल के अध्ययन में मानव भूगोल की श्रेष्ठता स्थापित हो गयी ।

ब्रिटिस भूगोलवेताओं में मेकेन्डर महोदय ने मानव भूगोल का समर्थन किया । उन्होनें रॉयल ज्योग्राफीकल सोसाइटी ऑफ लंदन के प्रांगण में एक अनुसंधान प्रपत्र प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा है कि मानव भूगोल ही सामान्य भूगोल है । भौतिक भूगोल वेता ह्यम्बोल्ट के दावे का यह प्रतिकार था ।

अमेरिकी भूगोलवेताओं में मिस सेम्पुल तथा हटिंगटन ने विशेष रूप से मानव भूगोल की स्थापना की । भैरोज ने मानव पारिस्थैनिक संकल्पना के द्वारा अपने को भौतिक भूगोलवेता से मानव भूगोलवेता के रूप में प्रस्तुत किया । सेम्पूल रेटजल की छात्रा थी अतः सैम्पुल के कार्यो पर रेटजल का प्रभाव था । यद्यपि हंटिंग्टन प्रत्यक्षतः रेटजल से जुड़ा नहीं था लेकिल हंटिंग्टन पर भी रेटजल के कार्यो का प्रभाव था । हंटिंग्टन ने मानव भूगोल पर एक पुस्तक की रचना की जिसमें उन्होने मुख्य रूप से मनुष्य को कार्यो के आधार पर विभाजित किया । उन्होनें ही पहली बार कार्य के आधार पर मनुष्य को प्राथमिक,द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यो में विभाजित किया है। इन्होने मानव भूगोल के कार्य क्षेत्र को मूलतः मानवीय ,आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़ा है ।

रेटजल महोदय ने राजनीतिक और प्रादेशिक भूगोल के क्षेत्र में भी पुस्तकों की रचना की है इन पुस्तकों में भी मानव भूगोल की झलक है । राजनीतिक भूगोल में उनके कार्यो का प्रभाव जैलेन तथा हार्शोफर जैसे विद्वानो पर पड़ा है । इनकी अधिकतर कार्य भू–राजनीति से संबंधित

Scanned with CamScanner

है और भू–राजनीति का श्रोत मानव भूगोल है ।

अत: उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि इस द्वैतवाद के प्रारम्भ होते ही भूगोल का स्पष्ट विभाजन हो चुका था ।दोनों पक्षों द्वारा दावे–प्रविदावे प्रस्तुत किए जा रहे थे जबकि भूगोल एकीकृत विषय है । इसलिए ग्रिफिथ टेलर , स्टाम्प तथा ओ० एच० के० स्पेट जैसे भूगोलनेताओ ने इस विभाजन के बदले एकीकृत विषय वस्तु के विकास पर जोर दिया । वर्त्तमान समय में व्यावहारिक भूगोल की बढ़ती लोकप्रियता को देखने से स्पष्ट है कि भूगोल में किसी प्रकार का विभाजन आधारभूत विषयवस्तु के लिए खतरनाक साबित हो सकता है । यही कारण है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनेक भूगोलवेताओं ने विभाजन और द्वैतवाद के बदले एकीकृत भूगोल के विकास पर जोर दिया है।

Scanned with CamScanner